जीय जियारो (४०)

मुहिंजो साई प्राण प्यारो जीय जियारो आ अमां गरीबिजे नयनिन तारो जीय जियारो आ

साईं अमां जी प्रीति अलौकिक प्यारी आ टिन्ही लोकिन खां सचुपचु अद्भुत न्यारी आ हिकिड़ी राह जा राही .बेई हिकड़ो राम सहारो आ ।१।।

लोक वेद जा बंध्न अमिड़ साईं अ सिक में टोड़िया केई कशाला सूर सही नाता नाथ सां जोड़िया खटी कृपा करूणा सागर जी पातो प्रेम पसारो आ ।।२।।

वृह वाटिका मधुर विरूह में मगनु सहेलिंयू .बेई दिलि दूल्ह खे नितु दुलिराइनि तत सुख सहज सनेही अति अनुराग जो अंजनु पाए दिठो नेह निज़ारो आ ॥३॥

करूणा कियास जी पूरण सिद्धिता अमिड साई अ माणीं प्रेम राज जा थियड़ा .बेई मिठिड़ा राजा राणी वृन्दाबन जूं घिटिड़ियूं घुमंदे दि़ठिड़ो रासि विहार आ ॥४॥ मोती कुंड जे कदम्ब डर में रस जो झूलो झूले साईं अमां जी प्रोति जी वलिड़ी सदां फले फूले आंखि मिचोली रांदिड़ी खेदी दिनो आनन्द अपार आ ॥५॥

कद़हीं हलिन था यमुना तट ते करण इश्नान प्यारा नाम जपाए ब्रचिन नचाइनि कौतक करे अपारा सुरिन साराहियो साई अमिड़ सत्संग सोभारो आ ॥६॥

कदही वृन्दाबन परिक्रमा दियिन था सिहत हुलासा बृज वासियुनि जे रस विनोद जा दिसिन था खेल तमाशा कथा किर्तन में नाम रंग में गुज़िरियो सारो दिहाड़ो आ ॥७॥

जय जय युगल धणियुनि जी जै जै साई अमां सलोना जिनि भरिया आहिनि भाव भगित सांदासिन दिलि दोना सुख निवास जे साई अ जस चमिकयो नितु चोबारो आ ॥८॥